P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कविवर सेनापति और बिम्ब

वन्दना शर्मा
विभागाध्यक्षा,
हिन्दी विभाग
एम.एम.पी.जी. कॉलेज,
मोदीनगर

सारांश

कविवर सेनापति की गणना हिन्दी– साहित्य के मूर्धन्य विद्धानों में की जाती है। यद्यपि हमारे आदि कवियों में अपने वंश जन्मस्थान परिचय आदि की परम्परा नहीं रही तथापि रीतिकालीन कवि सेनापति ने अपने परिवार, पितामह, पिता, निवास स्थान, गुरू और अपना संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित छंद में प्रस्तुत किया है। हिन्दी की ऋतुवर्णन परम्परा के अत्यन्त महत्वपूर्ण स्तम्भ कविवर सेनापति अपने बारे में इस प्रकार लिखते है–

''दीक्षित परसराम, दादौ है विदित नाम,
जिन कीने जज्ञ, जाकी जग में बड़ाई है।
गंगाधर पिता, गंगाधर समान जाकौ,
गंगातीर बसति अनूप जिन पाई है।
महाजानि मानि, विद्यादान हूँ कौं चिंतामनि,
हीरामनि दीक्षित तैं पाई पंडिताई है।
सेनापति सोई, सीतापति के प्रसाद जाकी,
सब कवि कान दै सुनत कविताई है।''[1]

कविवर सेनापति विभिन्न शास्त्रों के ज्ञाता, भावुक ह्रदय और छंद शास्त्र के प्रखर विद्धान थे। अपनी कविता का परिचय देते हुए वे लिखते हैं कि उनका काव्य मूर्ख व्यक्तियों के लिए अगम्य, परंतु तीव्रबुद्धि के लिए सुलभ है। इसको समझने के लिए छंदशास्त्र का ज्ञान और रसिक होना आवश्यक है।

'मूढ़क कौ अगम, सुगम एक ताकौ, जाकी
तीछन अमल विधि बुद्धि है अथाह की।'[2]

कविया से भवभूति कालिदास माघ जैसे संस्कृत रचनाकारों लेकर नागार्जुन जैसे हिंदी कवियों तक हमारे यहाँ ऋतुवर्णन की एक अत्यन्त समृद्ध परम्परा मिलती है। जिनमे रीतिकालीन कवि, कविवर सेनापति का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि सेनापति की जन्मतिथि और मृत्यु का कोई पुख्ता प्रमाण नहीं मिलता किंतु 'कवित रत्नाकर' के अंतिम छंद के अनुसार कवि ने इस ग्रंथ का समापन सम्वत् 1706 विक्रमी में किया था–

'संवंत सत्रह सै छ में, सेई सियापति पाई।
सेनापति कविता सजी, सज्जन सजौ सहाइ।।[3]

शोध पत्र में ऋतुपर्णन में बिम्बों के महारथी कविवर सेनापति की इसी प्रतिभा को रेखांकित किया गया है। मैंने इस आलेख को सेनापति के दृश्य बिम्ब, उसके भेद, वस्तु बिम्ब, भाव बिम्ब, अलंकृत बिम्ब, प्रतीकात्मक बिम्ब एवं संश्लिष्ट बिम्ब तक स्पष्ट रखने का शोध परक प्रयत्न किया है। बिम्बों के प्रकार उदाहरण किस प्रकार एवं कितने मोहक दृश्यों के साथ कविवर सेनापति की कविता में आए हैं। यह जानना रीतिकालीन काव्य ही नहीं हमारी ऋतुवर्णन परम्परा के समृद्ध रूप को जानना भी होगा। वैसे सेनापति ने दृश्य बिम्बों के अतिरिक्त वर्णनात्मक बिम्ब, वस्तु बिम्ब, भाव बिम्ब एवम् अलंकृत बिम्बों को भावप्रवण तरीके से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। सेनापति का शब्द संयोजन, विभिन्न वस्तुओं की गति के साथ साथ मन की प्रसन्नता, निराशा, शून्यता अथवा भय जनित पीडा और जड़ता इत्यादि के भी सजीव बिम्ब लिखे है। सेनापति ने नायिका के मनोभावों को व्यक्त करने में दृष्टि के विभिन्न आयाम जैसे चंचलता चकित होना, झलकना मन को मोहित करना, अन्तर्मन की अनुभूति कहना, प्रेम का प्रकटीकरण या क्रोध आदि का दर्शाना में भी बिम्बों का अद्भुत प्रयोग किया गया है। कविवर सेनापति ने बिम्ब नियोजन में रूपक, उपमा, मानवीकरण आदि अलंकारों को आधार बनाते हुए अति स्वाभाविक सादृश्य वर्णन किए है।

मुख्य शब्द : ऋतुवर्णन बिम्ब विधान, सम्वेदनात्मकता, क्षिप्रता, गत्यात्मक, अमिधापरक, प्रतीकात्मकता।

प्रस्तावना

जहाँ किसी वस्तु, घटना, प्रसंग, रूप आदि का प्रत्यक्षीकरण किया जाता है अथवा शब्द–चित्र बनाया जाता है, वह दृश्य बिम्ब कहलाता है। वस्तुतः दृश्य व चाक्षुष बिम्ब में आपाततः एकरूपता दीखती है। दोनों ही नेत्र–गोचर है। इस दृष्टि से देखें तो चाक्षुष बिम्ब का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। ये अन्य ऐन्द्रिय बिम्बों में भी अपना दखल रखते हैं। उदाहरण के लिए गुलाब की गंध, उसका कोमल स्पर्श व उसका मनभावन रूप तीन विभिन्न इन्द्रियों से सम्बन्धित है। कुछ कवियों ने गुलाब की कलियों के चटकने की ध्वनि से नायक–नायिका के जागने का भी वर्णन किया है। गुलाब की पंखुड़ियों को मुख में डालकर भी उनका स्वाद लेते व्यक्तियों को देखा जा सकता है। यदि यह विवरण ही कवि की लेखिनी का विषय बन जाए, तो एक गुलाब ही इन्द्रियजन्य पाँच प्रकार के बिम्ब बना सकता है। वस्तुतः बिम्ब की महत्ता उसके मूर्त रूप में है और मूर्त रूप की प्रथम दृष्टा आखें ही होती हैं।

दृश्य–बिम्ब के अपने भेद हैं। कोई दृश्य मनमोहक है, किन्तु वह स्थिर है जैसे ताजमहल का सौन्दर्य। कहीं गति जैसे अनंत आकाश में उड़ते हुए पक्षियों का मन–मोहक रूप और कभी वर्णन के माध्यम से किसी दृश्य को साक्षात कराने का प्रयास। इस दृष्टि से दृश्य–बिम्ब के तीन भेद किये जा सकते हैं,

1. स्थिर बिम्ब
2. गत्यात्मक बिम्ब
3. वर्णनात्मक बिम्ब

स्थिर बिम्ब

विविध वस्तुओं का यथावत् चित्रण होने पर अथवा वर्णनीय विषय की स्थिरता होने के कारण स्थिर–बिम्ब का निर्माण होता है। कैकेयी कोपभवन में है, यह सुनकर गोस्वामी तुलसीदास के दशरथ के मन में भय, आशंका व चिन्ता के बिम्ब को इस कोटि में ले सकते है,

कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ।
भय बस अगहुड़ परइन पाऊ।।
सो सुनि तिय रिस गउ खाई।
देखहु काम प्रताप बड़ाई।।

मन की निराशा, हताशा, शून्यता और भय जनित जड़ता तथा भौंचक्केपन का ऐसा ही चित्र मुक्तिबोध की इन पंक्तियों में दर्शनीय है,

''वह मैं, वह मैं
जाने कब से
मेरे हाथ हुए पत्थर के
मेरे पैर मृतिका स्तर के
मेरी सूरत माटी की सी
दिल के भीतर गरम ईंट है, गरम ईंट है
जले हुए ढूंढ के तने–सी स्याह पीठ है।[4]

गत्यात्मक बिम्ब

शब्दों का वह संयोजन, जहाँ विभिन्न वस्तुओं की गति, क्षिप्रता व सक्रियता का वर्णन हो गत्यात्मक बिम्ब का निर्माण करता है। श्री राम की रावण के मुख से निन्दा सुनकर क्रोधित अंगद ने अपने दोनों भुजदण्ड़ों को पृथ्वी पर मारकर जो तीव्र गर्जना की, तो पृथ्वी हिलने लगी, भयभीत सभासद गिर पड़े, रावण ने अपने को गिरते–गिरते सँभाला, उसके मुकुट पृथ्वी पर गिर पड़े, उनमें से कुछ उसने उठाकर अपने सिर पर रख लिये और कुछ अंगद ने राम के पास फेंक दिए, जिनको देखकर राम–सेना के वानर दिन में ही उल्कापात समझने लगे। समस्त दृश्य चलचित्र की रील की तरह चलता प्रतीत होता है,

कट्कटान कपि कुंजर भारी।
दुहु मुजदण्ड तमकि महि मारी।।
डोलत धरनि सभासद खसे।
चले भाजि भय मारूत ग्रसे।।
गिरत सँभरि उठा दसकंधर।
भूतल परे मुकुट अति सुंदर।।
कछु तेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे।
कछु अंगद प्रभु पास पबारे।।
आवत मुकुट देखि कपि भागे।
दिनहीं लूक परन बिधि लागे।।[5]

सेनापति के राम की शरसंधान की क्षिप्रता गत्यात्मक बिम्ब का उत्तम उदाहरण है,

काढ़त निषंक तै, न साधत सरासन मैं,
खैंचत्, चलावत्, न बान पेखियत है।[6]

वाण के निकालने, साधने, खेंचने व चलाने में इतनी क्षिप्रता है कि इन चारों क्रियाओं से सम्बन्धित वाण किसी भी अवस्था में दिखाई नहीं देता है।

वर्णनात्मक बिम्ब

प्रबन्ध काव्य में कथा–क्रम को लेकर चलना पड़ता है और इस वर्णन–प्रक्रिया में भाव को संवेदना के स्तर तक लाने के लिए मूर्त–विधान करना पड़ता है। मुक्तक–काव्यों में भी नायक–नायिकाओं के रूप–वर्णन या गतिविधियों का अंकन करते समय वर्णनात्मकता का सहारा लेना पड़ता हैं इस प्रकार के बिम्ब वर्णनात्मक कोटि के कहलाते हैं। धनुष–भंग के बाद महाराज जनक के यहाँ से दूत राजा दशरथ के लिए पत्र लेकर आए हैं। राजा ने दूतों को बुलाया,

करि प्रनाम तिन्ह पाती दीन्ही।
मुदित महीप आपु उठि लीन्ही।।
वारि विलोचन बॉचत पाती।
पुलक गात आई भरि छाती।।
रामलखन उरकर बर चीठी रहि
गए कहत न खाटी मीठी।
पुनि धरि धीर पत्रिका वांची।
हरषी सभा बात सुनि सांची।[7]

इस प्रसंग का समस्त विवरण बिम्ब–विधान के द्वारा हुआ है। आगे भरत–शत्रुघ्न का पत्र के बारे में पूछताछ उनके हृदय की प्रसन्नता, दूतों के प्रति स्नेह, दरबारियों के हर्ष आदि का वर्णन मनोरम बिम्बों के द्वारा किया गया है। सेनापति की नायिका नायक के साथ अपने प्रथम–परिचय व उससे उत्पन्न स्नेह का वर्णन इस प्रकार करती है,

नन्द के कुमार, मार हू तैं सुकुमार, ठाढ़े
हुते निज द्वार, प्रीति–रीति परबीन हैं।
निकसि हौं आई, देखि रही सकुचाई, सेना–
पति जदुराई मोहिं देखि हँसि दीन हैं।।

तब तैं हैं छीन छबि, देखिबे कौं दीन, सब
सुधि–बुधि हीन हम निपट अधीन हैं।
बिरह मीन, चैन पावत, अली न, मन
मेरौ हरि लीन तातैं सदा हरि लीन हैं।।[8]

वस्तु बिम्ब

वस्तु बिम्ब विधान में विभिन्न वस्तुओं को बिना किसी अलंकार आदि के, सीधे–सरल ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाता है। इनमें दैनिक जीवन, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यापारों को विस्तार से चित्रित किया जाता है। कविवर पदमाकर का शिशिर ऋतु से सम्बन्धित एक चित्र दर्शनीय है।

''गुल गुली गिल मैं गलीचा है गुनीजन हैं,
चाँदनी है चिक हैं चिराकन की माला हैं।
कहै पदमाकर त्यों गजक गिजा है सजी,
सेज हैं सुराही हैं सुरा हैं अरू प्याला हैं।
सिसिर के पाला को न व्यापत किसाला तिन्हें,
जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं।
जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं।
तान तुक ताला है विनोद के रसाला है।
सुबाला है दुसाला है विशाल चित्रशाला है।।[9]

पदमाकर के इस छन्द में शिशिर ऋतु का आनन्द लेने के लिये फूलों, गलीचा, चिक, गजक, मदिरा, सुंदरी दुशाला और चित्रशाला और उपकरणों, भोज्य–पदार्थो एवं अन्य वस्तुओं की गणना की गयी है। इसमें आलंकारिता का अभाव है। सेनापति ने भी जेठ के महीने में खसखाने, मकान के नीचे के भाग, आले, तहखाने आदि के झाड़ने, चूने से सफेदी करने, जल–यंत्रों की मरम्मत करने, अतर, गुलाब, अरगजा, मालाएँ एकत्रित करने आदि का बिना किसी अलंकार के सहारा लिए वर्णन किया है।

भाव बिम्ब

जब कवि किसी भाव की अनुभूति करता है, तब उस भाव की तीव्रता उसे अभिव्यक्ति के लिए बाध्य करती है। भाव की अमूर्तता यदि बिम्ब–विधान के माध्यम से मूर्त की जा सके, तो अभिव्यक्ति की प्रखरता दर्शनीय बन जाती है। किसी भाव की अनुभूति को ज्यों का त्यों सहृदय पाठक तक पहुँचाना भाव–बिम्ब के द्वारा सरल होता है। नायिका के हृदय में उत्पन्न नवीन प्रेम–भाव को शब्दों में व्यक्त करने के लिए चितवन के समस्त गुणों–चंचलता, चकित होना, झलकना, मन को मोहित करना, हृदयस्थ बात का कहना, पैनापन, तिरछापन, प्रेम का लाभ, कुलकानि का संकोच, थोड़ी सी नाराजगी, प्रेम–रस की वर्षा, हंसी का घोल आदि को बिम्ब–विधान के द्वारा सेनापति इस प्रकार व्यक्त करते हैं

चंचल, चकित चल, अंचल मैं झलकति,
दुरे नव नेह की निसानी प्रानपिय की।
मदन की हेति, डारै ज्ञान हू के कन रेति,
मोहे मन लेति, कहे देति बात हिय की।।
पैनी, तिरछौहीं, प्रीति–रीहित ललचौहीं, कुल
कानि सकुचौंही, सेनापति ज्यारी जिय की।
नैंक अरसौंही, प्रेम–रस बरसौंही, चुभी
चित्त में हंसौहीं, चितवन ताही तिय
की।।[10]

एक छंद में अनेक भावों को मूर्त–रूप प्रदान कर भाव–बिम्ब का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

'अलंकृत बिम्ब'

उपमा, रूपक, मानवीकरण आदि अलंकारों को आधार बनाकर स्वाभाविक सादृश्य विधान अलंकृत बिम्बों की विशेषता है। इस प्रकार के बिम्बों में अलंकारों जैसी सजावट अथवा कृत्रिमता का अभाव होता है किन्तु उपमानों तथा साधर्म्य अथवा सादृश्य का सौन्दर्य बना रहता है। निराला प्रथम मिलन की मादकता, लज्जा, कौतूहल, जिज्ञासा, सन्तुष्टि की आशा, प्रतीक्षा की समाप्ति आदि विविध भावों को अलंकृत–बिम्ब के माध्यम से इस प्रकार मूर्त रूप–प्रदान करते हैं,

कौन तुम रूपसि कौन?
व्योम से उतर रही चुपचाप,
छिपी निज छाया
छवि में आप,
सुनहला फैला केश कलाप,
मधुर, मंथर, मृदु, मौन![11]

प्रतीकात्मक बिम्ब

विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, शास्त्रीय तथा जीवन–व्यापार सम्बन्धी प्रतीकों द्वारा बिम्ब विधान प्रतीकात्मक बिम्ब के अन्तर्गत आता है। भ्रमर व चातक जहाँ अपना जातिगत अथवा अभिधा परक अर्थ देते हैं, वहाँ ये दो प्रवृत्तियों के प्रतीक भी हैं। चातक एक निष्ठ प्रेम का प्रतीक है और भ्रमर रूप लोभी विलासी व्यक्ति का। किसी को रूप लोभी या विलासी कहने में वह पैनापन नहीं, जो केवल भ्रमर कहने में है। सेनापति की नायिका नायक को उपालम्भ देती हुई कहती है कि आप प्रेम पूर्वक उस परकीया के साथ ही रमण करते हों, उसके घर ही आराम करते हों, उनको देखकर ही हंसते हो, उनको यहां जानकर ही अरे भ्रमर हमारे घर आए हो और यहां हमें पाकर अनमने हों,

जानि बेई बाम, भौरे आए हौं हमारे धाम
सेनापति स्यामह हम पातैं अनखाति।[12]

भ्रमर रसिक प्रवृत्ति का प्रसिद्ध प्रतीक है। 'भौरे आए हो हमारे धाम' कहने से जो अर्थ व्यंजित हुआ है तथा इस पुष्प से उस पुष्प पर बैठने वाले भ्रमर के बिम्ब के माध्यम से नायक के रूप लोभी स्वरूप की जो अभिव्यक्ति हुई है, वैसी अन्यथा सम्भव नहीं।

महाकवि निराला ने भी अपनी प्रसिद्ध कविता 'गुलाब' में गुलाब को उच्च वर्ग के शोषक, 'पूंजीपति' के प्रतीक रूप में वर्णित करते हुए प्रभावी बिम्ब–निर्माण किए हैं,

''अबे सुन बे गुलाब
भूल मत, गर पाई खुशबु रंगों आब
खून चूसा डाल का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट।
कितनों को तूने बनाया गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाडा घाम।[13]

संश्लिष्ट बिम्ब

विविध भाव, संवेदना (आत्मगत तथा वस्तुगत) एवं विभिन्न ऐन्द्रिय बिम्ब (चाक्षुस, श्राव्य, घातव्य आदि) के मिले जुले बिम्ब संश्लिष्ट बिम्ब होते हैं। सेनापति अपनी

नायिका की समानता चन्द्रमा से करना उचित नहीं समझते, क्योंकि चन्द्रमा हंस–हंस कर न तो मीठी–मीठी बात कर सकता है और न तिरछी चितवन डाल सकता है,

हँसि हँसि, मीठी मीठी, बातें कहि कही, ऐसे
तिरछे कटाक्ष कब चन्द बरसत।।[14]

यहां चाक्षुष, श्राव्य व आस्वाद्य बिम्बों को साक्षात रूप देखा जा सकता है।

प्रसाद ने सुख–दुख आनन्द उल्लास, प्रेम, जाग्रति आदि विधि भाव बिम्बों, प्राकृतिक तथा दृश्य बिम्बों को संश्लिष्ट बिम्बों के सहारे निरूपित किया है।

''समरस थे जड़ या चेतन,
सुंदर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती,
आनंद अखण्ड घना था।[15]

साहित्यावलोकन

जैसा कि सर्वमान्य है कि रीति शब्द विशेष पद संघटना निर्माण को कहा जाता है, हिन्दी साहित्य में रीतिकाल की अवधि 16वीं शताब्दी के मध्यकाल से 19वीं शताब्दी के मध्य तक माना गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काल विभाजन के आधार में जिन विशेषताओं को महत्वपूर्ण माना उनमें किसी समय विशेष में खास प्रकार की रचनाओं और प्रवृत्तियों के बाहुल्य को भी माना। यद्यपि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ''हिन्दी साहित्य का इतिहास में काव्य के स्वरूप पर निम्नवत् लिखा कि 'हिन्दी के रीतिकाल कवियों ने संस्कृति के इन परवर्ती ग्रंथों का मत ग्रहण किया। कवियों न कविता लिखने की यह प्रणाली ही बना ली''[16] असल में साहित्य निर्माण में तत्कालीन परिस्थितियाँ अनिवार्यतः ही साहित्य लेखन को प्रभावित करती है।

'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक साहित्येतिहास ग्रन्थ में डॉ0 नगेन्द्र ने इस पर अत्यंत विस्तार पूर्वक लिखा है–

'सामाजिक अवस्था के समान इस युग में देश की सांस्कृतिक अवस्था भी अत्यंत शोचनीय थी। विलास वैभव के खुले प्रदर्शन के कारण अपनी अपनी धार्मिक आस्थाओं का दृढ़तापूर्वक पालन भी इनके लिए एक प्रकार से कठिन हो गया था। मंदिरों में भी अब ऐश्वर्य और विलास की लीला होने लगी थी। यह स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी थी कि हिंदु अपने आराध्य राम–कृष्ण का अतिशय श्रृंगार ही नहीं करने लगे थे, उनकी लीलाओं में अपने विलासी जीवन की में अपने विलासी जीवन की संगति खोजने लगे थे।'[17]

डा0 नगेन्द्र के उक्त कथन से तत्कालीन परिवेश एवं साहित्य संसार की किंचित झलक हमें अवश्य मिलती है। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है तो कवि भी इससे अछूता नहीं रहता।

विश्लेषण

वस्तुतः कवि अपनी अनुभूति की तीव्रता को पाठक तक पहुँचाने के लिए ही प्रतीकों से अधिक बिम्बों का आश्रय लेता है। प्रभाव या स्थायित्व की दृष्टि से इन्द्रियों का आश्रय लेना अपरिहार्य है। अपनी अनुभूति को पाठकों की अनुभूति बनाना, उस भाव, विचार या दृश्य को साक्षात कराना बिना इन्द्रियों के सम्भव नहीं होता। अतः बिम्ब का मूल आधार ही ऐन्द्रिय है और वस्तु या भाव की प्रबलता के कारण ही बिम्बों का विवेचन किया जाता है। अब क्योंकि इस बिम्ब विधान में उत्कृष्टता लाने के लिए विभिन्न अलंकारों एवं प्रतीकों का प्रयोग जाता है इस आधार पर भी बिम्ब विभाजन महत्वपूर्ण हो जाता है। इसलिए ही मैंने ऋतुवर्णन के अद्भुत कवि सेनापति के कुछ बिम्बों को वर्गीकृत करके इस शोधपत्र में भी समाहित किया है। अपने सहयात्रियों की तुलना में भी कविवर सेनापति मुझे कमस्कम ऋतुवर्णन के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण लगते है।

अध्ययन का उद्देश्य

बिम्ब, प्रतीक और अलंकार किसी कविता की सम्वेदनात्मक अभिव्यक्ति के सर्वोच्च साधन हैं। ये कविता में आभूषण हैं इन्हीं के द्वारा कोई कविता पाठकों के मन मस्तिष्क तक अपनी मनोरम सम्प्रेषणीयता के उच्चतम शिखर पर होती है। रीतिकालीन कवि, कविवर सेनापति एक ऐसे जरूरी हैं। कवि ने जिन्हें स्वयं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी की विशेष श्लाघा मिली। सेनापति के काव्य में ऋतुवर्णन उनका सिद्धहस्त क्षेत्र है। ऋतुवर्णन परम्परा में सेनापति कृत ऋतुवर्णन का जो योगदान है उसे रेखांकित किया जाना अत्यावश्यक रहा है। उक्त शोध पत्र में मैने सेनापति के वृहद काव्य में से ऋतुवर्णन में प्रयुक्त कुछ बिम्बों को पाठकों के समक्ष रेखांकित करने का प्रयत्न इसीलिए किया है ताकि हिन्दी काव्य धारा की सहस्त्र धारा भगीरथी में से कुछ के बिंदु अभिषेक पाठकों तक पहुँचाया जा सके। कविवर सेनापति के काव्य में जिस प्रकार एक से बढ़कर एक बिम्बों एवं प्रतीकों का प्रयोग मिलता है वह साहित्य निधि में सेनापति के योगदान को और भी महत्वपूर्ण बना देता है अतः यह करणीय कर्त्तव्य रहा कि कविवर सेनापति के उक्त बिम्बों की छटा को पाठकों के सम्मुख रखा जा सके।

निष्कर्ष

पाश्चात्य, भारतीय एवं स्वकीय वर्गीकरण के बाद यह निष्कर्ष निकालना अनुचित नहीं होगा कि कोई भी वर्गीकरण अपने में अपूर्ण है। बिम्ब–विधान पर कार्य करने वाले सभी लेखकों ने बिम्ब का वर्गीकरण अपने–अपने ढंग से किया है। अतः एकरूपता का अभाव होना स्वाभाविक है। इसके साथ यह कहना भी असंगत नहीं हेागा कि जब किसी कवि के काव्य का तल–स्पर्शी, अध्ययन करते हैं तो अपने द्वारा किया गया वर्गीकरण भी कभी कम पड़ने लगता है और कभी फालतू प्रतीत होने लगता है। अपने वर्गीकरण के अतिरिक्त कभी कुछ जोड़ना पडता है और कभी कुछ छोड़ना पड़ता हैं। बिम्ब के कुछ प्रसिद्ध भेद प्रायः सभी को अस्वीकार्य हैं, किन्तु यह भेदोपभेद की श्रृंखला बहुत दीर्घ हो सकती है। उदाहरणार्थ संश्लिष्ट बिम्ब के अनेक भेद बनाये जा सकते है। रंग, यंत्र, ध्वनि, प्रसाधन, आयु, रूप आदि आधार पर भी बिम्ब का स्वरूप बदलता दिखाई देगा। अतः सर्वमान्य सिद्धान्त यह है कि बिम्ब मुख्यतः चाक्षुष या दृश्य होता है। अन्य इन्द्रिय जन्य बिम्बों में भी चाक्षुष बिम्ब का स्वरूप कहीं न कहीं छिपा रहता है।

वास्तव में कविवर सेनापति की बिम्ब योजना उनकी स्वाभाविक काव्य प्रतिभा, सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति,

विलक्षण कल्पना शैली का परिचय देती है। अतः बिम्बविधान की दृष्टि से सेनापति का हिंदी कविता में विशिष्ट स्थान है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *कवित्त रत्नाकर, 01–05, सम्पादक पं0 उमाशंकर शुक्ल हिन्दी परिषद प्रकाशन, प्रयाग वि0 वि0, प्रयास 1971, पृ0–2*
2. *कवित्त रत्नाकर–06*
3. *कवित्त रत्नाकर–5–44 सम्पादक पं0 उमाशंकर शुक्ल हिन्दी परिषद प्रकाशन, प्रयाग वि0 वि0, प्रयाग 1971*
4. *इस चौड़े ऊँचे टीले पर, चाँद का मुँह टेढ़ा है, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ पृ0–216*
5. *रामचरित मानस–लंका काण्ड़–31 (ख) पृ0 सं0–786, टीकाकार हनुमान प्र0 पोद्दार, प्र0 मुद्रक–गीता प्रेस गोरखपुर सं0–2065– 21 पुर्नमुद्रण*
6. *कवित–रत्नाकर 4–60*
7. *रामचरित मानस – बालकाण्ड 290, पृ0 सं0–260, टीकाकार हनुमान प्र0 पोद्दार, प्र0 मुद्रक–गीता प्रेस गोरखपुर सं0–2065–21 पुर्नमुद्रण.*
8. *कवित्त–रात्नाकर, 2–13*
9. *पदमाकर ग्रंथावली छन्द स–361*
10. *कवित्त–रत्नाकर, 2–3*
11. *लहर भाष्य–पृ0 सं0–109 भाष्यकार–डा0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना लोकवाणी प्रकाशन–प्रथम संस्करण।*
12. *कवित्त–रत्नाकर 2–41*
13. *कुकुरमुत्ता, निराला, पृ.–9 किताब महल, इलाहाबाद।*
14. *कवित्त–रत्नाकर 2–62*
15. *लहर–भाष्य –लेखक – डा0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना, लोक भारती प्रकाशन पृ0 सं0–06 प्रथम संस्करण*
16. *हिन्दी साहित्य का इतिहास–पं0 रामचन्द्र शुक्ल (नवां संस्करण), पृ0 233, प्रकाशक नागरी प्रचारिणी सभा*
17. *हिन्दी साहित्य का इतिहास–सम्पादक डा0 नगेन्द्र, सह सम्पादक डा0 हरदयाल, मयूर पैपर बैक प्रथम संस्करण–1973*